सत्यमेव जयते

हमारे प्रकाशन

पितेव रक्षेल्ललितोपदेशै-
मातेव चैतन्यपयो दिशेच्च।
कान्तेव नित्यं ह्याभिरञ्जयेत् तद्
विद्यागृहं पुस्तकमाचिनुध्वम्।।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

(राजस्थान सरकार के अधिनियम 10, वर्ष 1998 के अन्तर्गत स्थापित)

मदाऊ, भांकरोटा, जयपुर-302 026 (राज.)

www.jrrsanskrituniversity.ac.in

Integral World-View of the Vedas

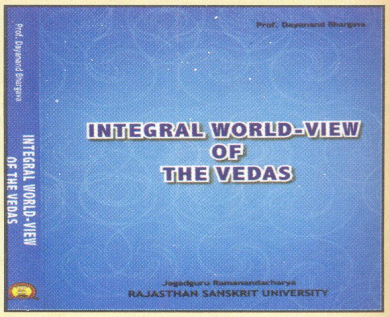

लेखक– प्रो. दयानन्द भार्गव
मूल्य : 395/-

यह ग्रन्थ आंग्लभाषा में विरचित है। **प्रो. दयानन्द भार्गव** ने पुराण कीर्तन को आधार मानकर इस ग्रन्थ का निरूपण किया है। ग्रन्थ में 304 पृष्ठ हैं। ग्रन्थ का लोकार्पण पुनश्चर्या पाठ्यक्रम 2006-07 के समापन अवसर पर तत्कालीन **शिक्षामंत्री श्री घनश्याम तिवाड़ी** द्वारा दिनांक 29.08.2007 को किया गया। इसका मूल्य रू.395/- है।

ज्योत्पत्ति–

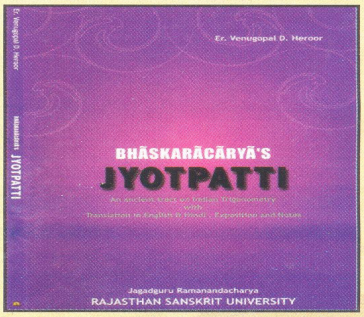

सम्पादक–वेणुगोपाल जी हेरूर
डॉ. जे.एन. विजय
मूल्यः 195/-

ज्योतिषशास्त्र में भास्कराचार्य विरचित सिद्धान्त शिरोमणि एक अनुपम कृति है। इससें गणित अध्याय एवं गोल अध्याय हैं। इस ग्रन्थ की विशेषता है कि गणित अध्याय में त्रिकोणमिति फलों का अध्याय आधुनिक गणित शास्त्र के समान प्रतीत होता है। **वेणुगोपाल** महोदय जो इस ग्रन्थ के सम्पादक थे इन्होंने ग्रन्थ के नवीन सिद्धान्तों का निरूपण किया। **डॉ. जे.एन. विजय** (सहायक कुलसचिव) ग्रन्थ के हिन्दी भाषा में सम्पादक है । इस ग्रन्थ का लोकार्पण तत्कालीन **शिक्षामंत्री श्री घनश्याम तिवाड़ी** द्वारा दिनांक 29.08.2007 को किया गया इसका मूल्य रू.195/-हैं।

सांख्यकारिका (अशोकदा-संस्कृतव्याख्या सहित)–

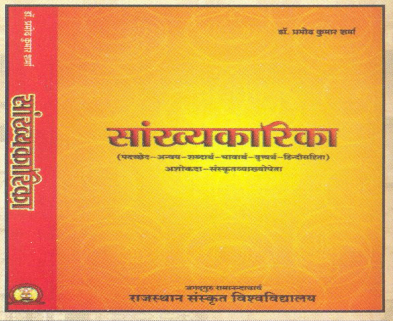

सम्पादक–डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा
मूल्य : 295/-

आस्तिक दर्शनों में भगवान् कपिल द्वारा प्रणीत सांख्यदर्शन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस दर्शन का प्रामाणिक और सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ सांख्यकारिका है। जिसकी व्याख्या वाचस्पति मिश्र जी द्वारा विरचित है।

सुकुमारमतियों का भी इस ग्रन्थ में सुखपूर्वक प्रवेश हो इसके लिए ज.रा.रा.सं. विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के सहायक आचार्य **डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा** ने अतिसरल और प्रामाणिक अशोकदा नाम की व्याख्या की है जिसमें संस्कृत भाषा का नूतन प्रयोग द्रष्टव्य है। साथ ही हिन्दी व्याख्या भी की गयी है। ग्रन्थ में 254 पृष्ठ हैं। ग्रन्थ का लोकार्पण शिक्षक दिवस दिनांक 5 सितम्बर, 2007 को **परम पूज्य सन्त शिरोमणि श्री नारायणदास जी महाराज, मान.सांसद श्री रामदास अग्रवाल** एवं राजस्थान के तत्कालीन गृहमंत्री **माननीय श्री गुलाबचन्द कटारिया** द्वारा किया गया । इसका मूल्य रू. 295/-है।

काव्यदर्शनविमर्शः—

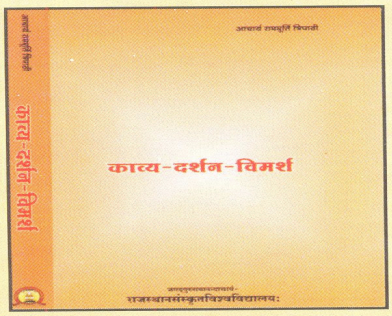

सम्पादक–आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी
मूल्य : 320/-

प्रो. राममूर्ति त्रिपाठी द्वारा रचित इस कृति के दो भाग है-काव्य-विमर्श तथा शास्त्र-विमर्श। काव्य विमर्श के अन्तर्गत भी दो खण्ड हैं-- सुरभारती तथा राष्ट्रभाषा खण्ड। सुरभारती खण्ड के अन्तर्गत सर्वतन्त्रस्वतन्त्र कवि तार्किक चक्रवर्ती पं. श्रीमन्महादेव पाण्डेय का संक्षिप्त जीवन वृत्त, काव्यशास्त्रीय कतिपय अक्षुण्ण विषयों के उपस्थापन के साथ परिस्थिति की तथा तन्त्रलोकान्तर्गत दिक्काल विमर्श की प्रस्तुतियाँ प्रमुख हैं। राष्ट्रभाषा खण्ड में राष्ट्रभाषा माध्यम है उसी प्रकार जिस प्रकार पूर्ववर्ती खण्ड का माध्यम सुरभारती देववाणी है। इस खण्ड के विवेच्य विषय काव्यशास्त्रीय कतिपय महत्त्वपूर्ण विवादास्पद पक्ष या बिन्दु हैं। उदाहरणार्थ, काव्यशास्त्र की परिधि में काव्य का स्वरूप, अलंकार, सिद्धान्त, काव्य तथा नाट्य शास्त्रीय रस-विमर्श, रसाभास, भावाभासादि का विमर्श, सौन्दर्य शास्त्र का भारतीय पक्ष तथा अन्य।

ग्रन्थ का उत्तरार्ध भारतीय दर्शन, धर्म तथा साधना के विभिन्न पक्षों से सम्बद्ध है। इसमें पातंजल दर्शन, सम्यक् समाधि, हठयोग के विभिन्न पक्ष तथा आगम तंत्र सम्मत विविध साधनाओं का विवेचन है।

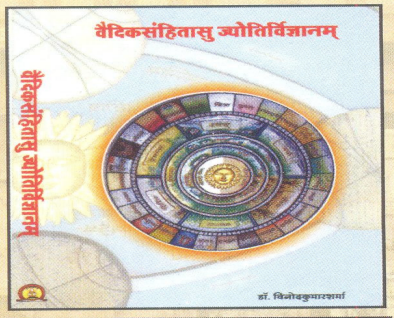

सम्पादक–डॉ. विनोद कुमार शर्मा
मूल्य : 301/-

वैदिकसंहितासु ज्योतिर्विज्ञानम् —

चारों वेदों तथा उनसे सम्बन्धित संहिता ग्रन्थों में ज्योतिष शास्त्र के विविध विषय, वैज्ञानिक तथ्य तथा खगोलीय रहस्य भरे पड़े हैं। इन्हीं विषयों को आधार बनाकर विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभागाध्यक्ष **डॉ.विनोद कुमार शर्मा** ने प्रयास पूर्वक शोध कार्य किया है। ग्रहरश्मिविज्ञान, सृष्टि की उत्पत्ति के दस वैदिक

सिद्धान्त, नक्षत्र विज्ञान, आकर्षण-प्रकर्षण विज्ञान आदि विषयों पर लेखक ने अद्भुत वैदिक सिद्धान्तों पर अनुशीलन करते हुए ग्रन्थ का लेखन किया है।

3. Ashvashastram- (An illustrated Book of Equenology) :-

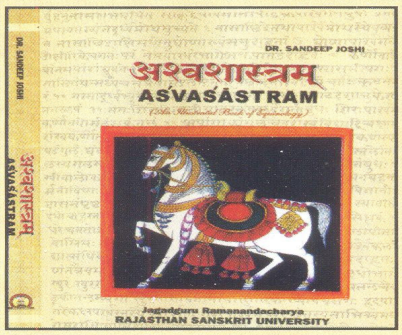

सम्पादक-डॉ. सन्दीप जोशी
मूल्य : 2100/-

अश्वशास्त्रम्- एन इलस्ट्रेटेड बुक ऑफ इक्वेनोलॉजी एक दुर्लभ चित्रित संस्कृत पाण्डुलिपि पर आधारित ग्रन्थ है, जिसमें शालिहोत्र - नकुल - गर्ग - गण इत्यादि प्राचीन भारतीय अश्वशास्त्रज्ञों द्वारा वर्णित अश्वों से सम्बन्धित अनेकानेक विषयों (यथा-अश्वों के प्रकार, उनके शुभाशुभ लक्षण, आवर्त, वर्ण, पुण्ड्र, महादोष,गति, गन्ध, हेषित, सत्व, आयुज्ञान, अश्व प्रशिक्षण ,आरोह-विधान इत्यादि)का साङ्गोपाङ्ग वर्णन 250 रंगीन चित्रों के माध्यम से अंग्रेजी भाषा में किया गया है।

इस ग्रन्थ को सर्वजनोपयोगी बनाने के लिए प्रत्येक पृष्ठ पर श्लोक व उसकी अभिव्यक्ति करने वाले चित्रों का सारांश अंग्रेजी में दिया गया है। इस ग्रन्थ के आरम्भ में Horse Lore in Sanskrit Literature शीर्षक के अन्तर्गत वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, अश्ववैद्यक, शुक्रनीति, अर्थशास्त्र, युक्तिकल्पतरु, मृगपक्षिशास्त्र इत्यादि में वर्णित अश्व सम्बद्ध विभिन्न विषयों का वर्णन करने के साथ-साथ अश्वों से सम्बन्धित समग्र-साहित्य का विवरण प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के अन्त में सभी श्लोकों का अंग्रेजी व हिन्दी भाषा में अनुवाद भी दिया गया है। यथार्थ में यह ग्रन्थ अपने-आप में अश्वों का विश्वकोष है। इस ग्रन्थ के सम्पादक डॉ. संदीप जोशी (असिस्टेंट प्रोफेसर, अनुसंधान केन्द्र) हैं।

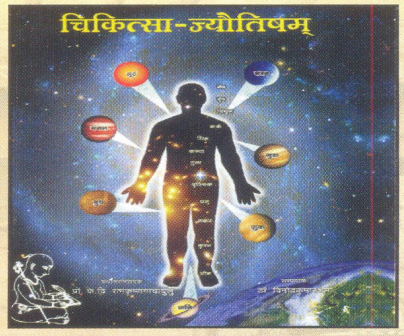

सम्पादक-डॉ. विनोद कुमार शर्मा
मूल्य : 475/-

चिकित्साज्यौतिषम्-

विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग द्वारा **ज्योतिष एवं चिकित्सा-लक्षण एवं उपचार** विषय पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान माला एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी में आचार्यों, चिकित्सकों तथा शोधछात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर चयनित शोधलेखों का सम्पादन ज्योतिष विभाग के अध्यक्ष **डॉ. विनोद कुमार शर्मा** ने किया है। पुस्तक में ज्योतिष के आधार पर रोग की पहचान, विविध

योगों के द्वारा उनके लक्षणों का ज्ञान तथा मणि मन्त्र और औषधि के द्वारा उनके निदान के सन्दर्भ में प्रामाणिक शोधलेखों का प्रकाशन किया गया है।

भारतीय सभ्यता का सांस्कृतिक फलक–

यह ग्रन्थ कोलकाता निवासी भारतीय संस्कृति के प्रमुख चिन्तक **डॉ. वासुदेव पोद्दार** द्वारा लिखित एवं **पं. अनन्त शर्मा,** अध्यक्ष, महात्मा रामचन्द्रवीर धर्मसंस्कृति पीठ जरारासंविवि, जयपुर द्वारा सम्पादित है इसमें भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्राचीनतम तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए वैश्विक विस्तार की चर्चा की गई है।

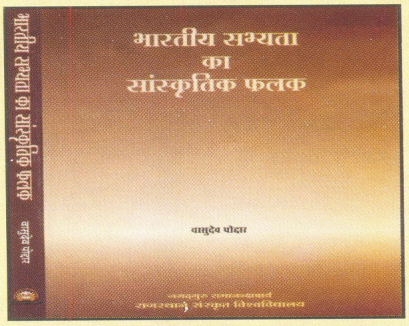

लेखक–वासुदेव पोद्दार
सम्पादक–अनन्त शर्मा
मूल्यः 235/-

इसमें भारतीय संस्कृति के मूल आध्यात्मिक - तत्त्व ओंकार का विशद विवेचन करने के पश्चात् द्वितीय अध्याय में सृष्टि के समुद्भव-संरचना-विकास और सिद्धान्त के पक्षों का नोबल पुरस्कार प्राप्त फ्रीमेन डायसन रिचर्ड फेनामेन, इल्या प्रिगोजिन, स्टीवन वेनबेर्ग आदि विश्व के महान् वैज्ञानिकों की अनुसन्धानपरक गवेषणाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए आदि-अण्ड की संरचना से विस्फोट तक के कालमान, प्रकाश की गति, युगों की काल गणना, कृष्णगर्त (BLACK HOLE) आदि के सम्बन्ध में भारतीय शास्त्रों के प्रमाणों को कहीं अधिक तर्क संगत एवं श्रेष्ठ प्रतिपादित किया गया है। अग्रिम अध्यायों में रामायण कालीन संस्कृति का विस्तार से विवेचन करते हुए महाभारत को पंचम वेद, श्रीमद्भागवत के भगवत्-तत्त्व, भारतीय नाट्यशास्त्र एवं महाकवि कालिदास के वैशिष्ट्य का प्रतिपादन कर अन्तिम अध्याय में भारतीय संस्कृति के महत्त्व, आदर्शों एवं सिद्धान्तों का फलक प्रस्तुत किया है।

प्रौढचिन्तनचन्द्रिका–

पं. आचार्यबदरिप्रसादशास्त्री प्रपूरणा-वास्तव्य ने गिरधरशर्मा चतुर्वेदी व्याकरण पीठ, ज.रा.सं.वि.वि. के अध्यक्ष पद पर रहते हुए शोधपरक अनेक शास्त्रीय निबन्ध लिखे। जिनको प्रौढ चिन्तनचन्द्रिका के रूप में सङ्कलित कर ग्रन्थ का रूप दे दिया गया है। यह सङ्ग्रह व्याकरण वेदान्त आदि विभिन्न शास्त्रों के गूढ रहस्यों को नवीन दृष्टि से प्रकाश में लाने के दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है।

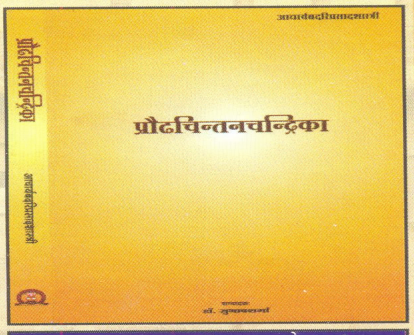

सम्पादक–डॉ. सुभाषेशर्मा
मूल्य : 195/-

पुराणदर्शन समग्र दृष्टि–

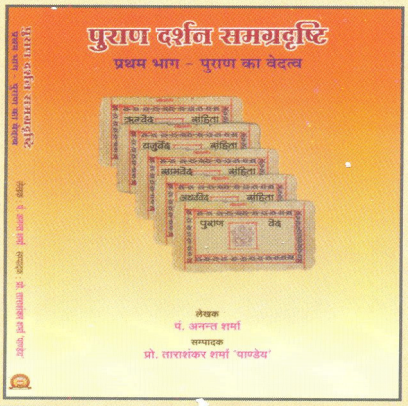

लेखक–अनन्त शर्मा सम्पा. प्रो. ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'	मूल्य: 275/-

संस्कृत वाङ्मय में यत्र तत्र उद्धृत पुराणों के पञ्चम वेद की सूत्ररूप अवधारणा को आधार मानकर सम्पूर्ण पुराण वाङ्मय को महर्षि अगस्त्यवत् चुलुकपान करने वाले **पं. अनन्त शर्मा जी** के अन्तर्मन में एक विचार-सागर तरंगित हुआ और उन्होंने पुराणों का वेदत्व प्रतिपादन करने के उद्देश्य से ग्रन्थ की रचना की। इसके लिए आपने वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषत्, महाभारत, स्मृतिग्रन्थ आदि शतशः ग्रन्थों से उद्धरण देते हुए पुराणों का वेदत्व सिद्ध किया है। इस ग्रन्थ का सम्पादन **प्रो. ताराशंकर शर्मा** ने किया है।

भक्तिरसस्यैव ब्रह्मस्वरूपत्वम्–

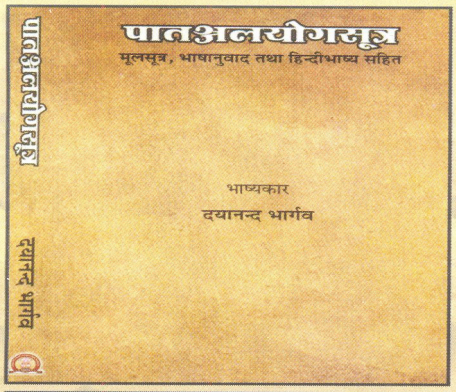

भाष्यकार–दयानन्द भार्गव मूल्य : 395/-

इस विश्वविद्यालय के साहित्य विभाग में सह-आचार्य के रूप में कार्यरत **डॉ. सुभाष शर्मा** ने रस के आलङ्कारिक स्वरूप का विवेचन करते हुए भक्ति के स्वरूप और भक्ति का रसत्व प्रतिष्ठापित करते हुए भक्ति रस को ही ब्रह्मस्वरूप मानने में विभिन्न शास्त्रों के सिद्धान्तों को आधार बनाकर युक्ति एवं तर्क प्रस्तुत किए हैं जो कि भक्ति सम्प्रदाय के लिए नई दिशा देने में महत्त्वपूर्ण है।

पातञ्जलयोगसूत्र–

प्रो. दयानन्द भार्गव द्वारा रचित योगसूत्र के इस भाष्य में वेद की समग्र-दृष्टि का अनुसरण करते हुए योग का ऐसा स्वरूप प्रकट किया गया है जो व्यक्ति के साथ-साथ समाज के लिए भी हितकर हो। इस भाष्य में यह भी प्रयत्न किया गया है कि योग को रहस्यवाद की धुन्ध से निकालकर

मनोविज्ञान और तर्क के स्तर पर स्थापित किया जाये।

यह भाष्य इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुये लिखा गया है कि आपाधापी के इस युग में चित्त की चञ्चलता तथा मानसिक तनाव का एक मात्र उपचार योग ही है। इस परिप्रेक्ष्य में यह भाष्य वर्तमान युग के लिए अत्यन्त प्रासङ्गिक होगा।

***

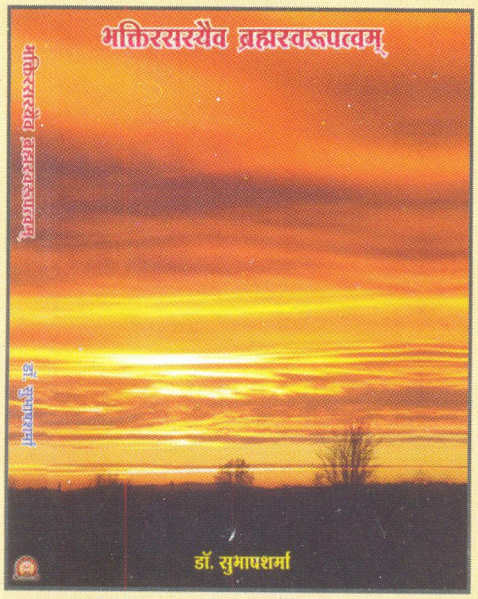

लेखक-डॉ. सुभाषशर्मा
मूल्य : 370/-

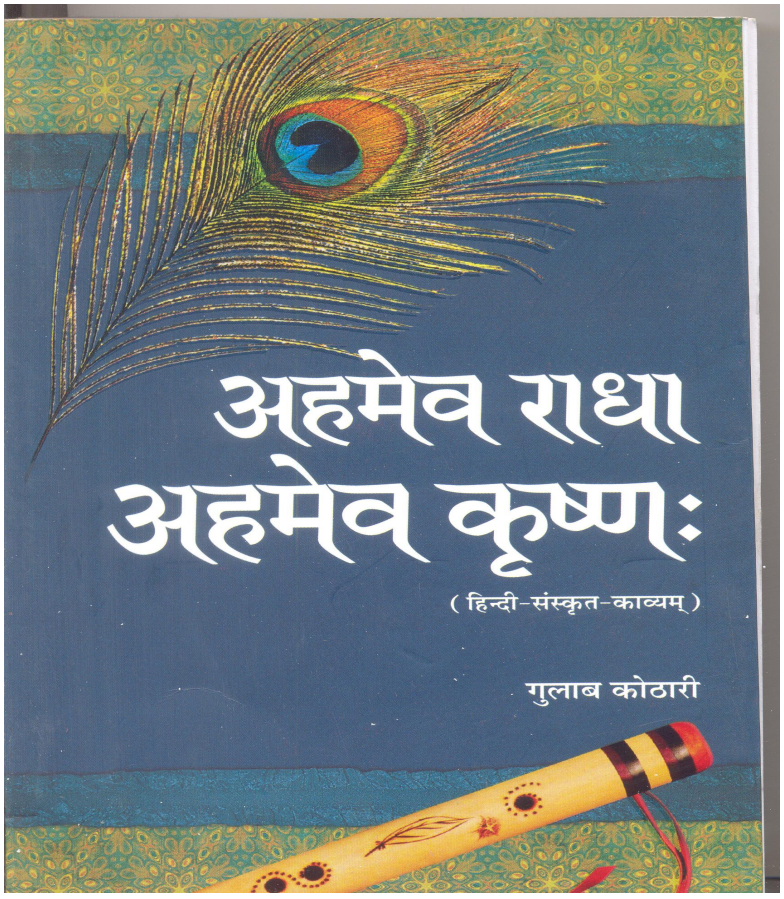

प्रेषिती

श्रीमान् _____

_____

_____

इन ग्रन्थों को पोस्ट द्वारा प्राप्त करने के लिए
'रजिस्ट्रार, ज.रा.रा.सं.वि.वि.'
के नाम डी.डी. प्रेषित कर सकते हैं।

कुलसचिव
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
मदाऊ, भांकरोटा, जयपुर-302 026 (राज.)
दूरभाष : 0141-5132021

प्रेषक :

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
मदाऊ, भांकरोटा, जयपुर-302 026 (राज.)
www.jrrsanskrituniversity.ac.in